

विचार बिन्दु

कहानी जहाँ खत्म होती है, जीवन वहीं से शुरू होता है। -संजीव

हाथ में हो या डिजिटल डिवाइस पर, किताबें रहेंगी पाठक रहेंगे!

एक अनुमान के अनुसार दुनिया भर में कागजी किताबों, इलेक्ट्रॉनिक किताबों और ऑडियो बुक्स के पाठक साल 2030 तक अपने पसंदीदा साहित्य पर करीब 174 अरब रुपये खर्च करेंगे। हर साल करीब 40 लाख नई किताबें बाजार में आ रही हैं। इसके चलते पाठकों के पास विकल्पों की भरमार है। हमारे यहाँ भी किताबें खूब प्रकाशित हो रही हैं। हाल ही में जयपुर में एक लेखिका की छह किताबों का एकसाथ लोकार्पण हुआ तो बीकानेर में भी एक अन्य लेखिका की पांच किताबों का एकसाथ विमोचन हुआ। प्रतिदिन कहीं न कहीं से किसी न किसी की किताब के लोकार्पण की खबर पढ़ने को मिल ही जाती है। कई बार तो ऐसा लगता है कि किताबें छपने का ऐसा सुनहरा दौर शायद पहले कभी नहीं रहा। जब इतनी किताबें छप कर सामने या रही हों तब यह चिंता तो जरूर दूर हो जानी चाहिए कि स्मार्टफोन के समय में किताबों का जमाना बीत गया। हमारे यहाँ उन किताबों की भी कमी नहीं जो लेखक अपनी जेब से खर्च करके छपवाता है। ऐसा करके साहित्यकारों की जमाना का हिस्सा बनने की लालच भी कुछ लोगों में होती है। करीब 600 साल पहले योहानेस गुटेनबर्ग ने जर्मनी में प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया तब से दुनिया भर में बड़ी मात्रा में किताबें छपी हैं। गूगल के एक अध्ययन के मुताबिक, साल 1440 में प्रिंटिंग प्रेस के अविष्कार से लेकर 2010 के बीच करीब 13 करोड़ हार्ड-बाउन्ड किताबें प्रकाशित हुईं। किताबों के जरिए जो ज्ञान लोगों तक पहुंचा वह मानवता के लिए वरदान ही साबित हुआ। लेकिन, पर्यावरणविदों की शिकायत है कि किताबें जिस कागज पर छपती हैं उसे बनाने के लिए बड़ी संख्या में पेड़ काटे जाते हैं। जंगल के पेड़ वन्यजीवों के मददगार ही नहीं होते बल्कि हवा को भी स्वच्छ करते हैं और जलवायु परिवर्तन की वजह बन रहे कार्बन को थामने में सहायता करते हैं। ब्रिटेन की किताबें छापने वाली एक बड़ी कंपनी पेंगुइन रैंडम हाउस, जो हर साल लगभग 15 हजार किताबें प्रकाशित करती है, का दावा है कि अब वह अपनी किताबें छापने के लिए पर्यावरण मित्र कागज का इस्तेमाल कर रही है। उसकी एक अधिकारी बताती है कि उनकी किताबों में इस्तेमाल होने वाला सी फीसदी कागज फॉरेस्ट स्टीवर्डशिप कार्डसिल (एफएससी) से प्रमाणित है। यह कार्डसिल टिकाऊ या दोबारा उग सकने वाली लकड़ी के पेड़ों की पैदावार का प्रबंधन करने का दावा करती है। मगर दूसरी तरफ कुछ विशेषज्ञ इस दावे को व्यावसायिक प्रचार कह कर खारिज करते हैं। ग्रीनपीस जैसे पर्यावरण समूह ने इस प्रकाशन संस्था पर ग्रीनवॉशिंग का आरोप लगाया है। ग्रीनवॉशिंग का अर्थ है किसी उत्पाद या सेवा के पर्यावरणीय फायदों के बारे में झूठे और भ्रामक बयान दिए जाना। प्रकाशन जगत के लोगों का कहना है कि उनके उद्योग से जलवायु पर होने वाले प्रभाव का 70 फीसदी से अधिक प्रभाव प्रिंटरों और पेपर मिलों की वजह से होता है। पेंगुइन रैंडम हाउस की अधिकारी का कहना है कि उनकी एक औसत किताब छपने की प्रक्रिया में 330 ग्राम कार्बन डाई ऑक्साइड पैदा होती है। इसमें ग्रीनहाउस गैस भी शामिल है। यह एक कप कॉफी बनाने में पैदा होने वाले कार्बन जितना है। इस आंकड़े में एक किताब के छपने से लेकर उसके ग्राहक तक पहुंचने की पूरी प्रक्रिया शामिल है। इसमें मशीनों की कार्य कुशलता, नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग और स्याही की किस्मों की भी गणना की गई है। इसकी तुलना में अन्य प्रकाशकों की एक औसत पेपरबैक किताब जलवायु को तीन गुना अधिक प्रभावित करती है। यह करीब एक किलोग्राम कार्बन डाई ऑक्साइड और दूसरी ग्रीनहाउस गैस पैदा करती है। यह 122 स्मार्टफोन को चार्ज करने और दो कप कॉफी बनाने के बराबर है। किताबों के डेटा विश्लेषकों के अनुसार कागज निर्माण में अब भी जलवायु पर उसका असर काफी ज्यादा है क्योंकि हर साल दुनिया भर में किताबों की लगभग 220 करोड़ कॉपियां बिकती हैं। अगर मान लिया जाए कि हर किताब से 330 ग्राम कार्बन डाई ऑक्साइड और दूसरी गैस निकलती है, तो इस हिसाब से हर साल किताबों की वजह से सात लाख टन से ज्यादा कार्बन डाई ऑक्साइड पैदा होती है। यह करीब डेढ़ लाख घरों को साल भर बिजली देने के बराबर है या, डेढ़ लाख डिब्बों से होने वाले कार्बन उत्सर्जन के समान है।

नियमित तौर पर पढ़ने वालों के लिए एक ई-रीडर पर्यावरण के लिहाज से बेहतर विकल्प हो सकता है। अब हार्ड कॉपी के शौकीनों को सलाह दी जाने लगी है कि वे केवल वही किताबें खरीदें, जो वे वास्तव में पढ़ेंगे। यह भी सलाह दी जाती है कि किताबें पढ़ने के बाद उन्हें रिसाइक्लिंग के लिए भेज दी जाए।

फिर क्यों नहीं किताबें कागज पर कम और इलेक्ट्रॉनिक रीडिंग डिवाइस अधिक पढ़ी जाएं? इस डिवाइस का यह फायदा भी है कि इसमें हजारों किताबें आ सकती हैं। इससे ना सिर्फ जंगल बचते हैं, बल्कि लकड़ी से कागज बनाने में लगने वाली ऊर्जा भी बच जाती है। इसके अलावा, इलेक्ट्रॉनिक किताबों को आसानी से किसी भी डिवाइस में क्षण भर में स्थानांतरित किया जा सकता है। ई-रीडर के बाजार में अमेजन डॉट कॉम सबसे बड़ा खिलाड़ी है जो अपने किंडल एप पर पढ़ने के जरिए हर साल करीब 48.7 करोड़ ई-बुक्स बेचता है। अमेजन के अनुसार हर महीने दुनिया भर में करीब 50 लाख लोग किंडल एप या डिजिटल डिवाइस पर किताबें पढ़ते हैं। यह तथ्य है कि हाल के वर्षों में युवा पाठकों में ई-बुक्स की लोकप्रियता बढ़ी है। एक अनुमान के अनुसार दुनिया में 2027 तक ई-बुक्स पाठकों की संख्या 110 करोड़ तक पहुंच सकती है। मगर क्या इससे पर्यावरण और जलवायु से संबंधित फायदे होंगे? डिजिटल उपकरणों के अपने कुछ नुकसान हैं। इनके उत्पादन में बहुत ज्यादा पानी और ऊर्जा का इस्तेमाल होता है। इनकी बैटरी बनाने के लिए कॉपर, लिथियम और कोबाल्ट जैसी दुर्लभ धातुओं और खनिजों का खनन होता है। ये उपकरण आमतौर पर प्लास्टिक से बने होते हैं, जो जीवाश्म ईंधन से प्राप्त होता है। किताबों की भांति यहाँ भी उनके उत्पादन चरण जलवायु सबसे ज्यादा प्रभाव करने के लिए जिम्मेदार है। ई-रीडर को इस्तेमाल करने के लिए उन्हें नियमित अंतराल पर चार्ज करना पड़ता है। कागज की किताबों के साथ यह समस्या नहीं होती। उनके लिए इंटरनेट कनेक्शन और चार्जिंग की जरूरत नहीं होती। किसी किताब की हार्ड कॉपी दशकों तक चल सकती है और कई लोगों के साथ साझा की जा सकती है। दूसरी तरफ, एक ई-रीडर तीन से पांच साल तक ही चलता है। किताबों का निस्तारण करना और रिसाइक्लिंग करना भी उतना जटिल नहीं होता। हालांकि, अमेजन जैसी कुछ कंपनियां अपने उपकरणों के लिए रिसाइक्लिंग कार्यक्रम चलाते लगी हैं, जिससे ई-कचरा ना बढ़े।

जापानी अध्येताओं का कहना है कि भौतिक और डिजिटल दोनों ही तरह की किताबों का पर्यावरणीय प्रभाव जटिल है। उन्होंने 2017 में पारंपरिक किताबों और ई-रीडर पर पढ़ने से होने वाले ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि अगर डिजिटल डिवाइस पर तीन साल के भीतर 15 या उससे ज्यादा किताबें पढ़ी जाएं, तो ई-रीडर जलवायु के लिए ज्यादा बेहतर साबित होता है। हालांकि, आईपैड के मामले में तीन सालों में 25 किताबें पढ़नी होंगी। इसका मतलब है कि किंडल पर साल में एक या दो किताबें पढ़ने से उत्सर्जन में ज्यादा कमी नहीं होगी। लेकिन जब पाठक दोनों ही माध्यमों से पढ़ेंगे तो क्या होगा? अध्ययनकर्ताओं का मानना है कि बहुत से लोग अब भी कागज की किताबें पढ़ना चाहते हैं, भले ही कुछ ई-बुक्स भी पढ़ते हों। लगभग 33 फीसदी अमेरिकी पाठक इसी श्रेणी में आते हैं। नियमित तौर पर पढ़ने वालों के लिए एक ई-रीडर पर्यावरण के लिहाज से बेहतर विकल्प हो सकता है। अब हार्ड कॉपी के शौकीनों को सलाह दी जाने लगी है कि वे केवल वही किताबें खरीदें, जो वे वास्तव में पढ़ेंगे। यह भी सलाह दी जाती है कि किताबें पढ़ने के बाद उन्हें रिसाइक्लिंग के लिए भेज दी जाए। मगर बहुत से लोग इसे किताबों के प्रकाशकों का अपने मान की बिक्री बढ़ाने का उद्यम करार देते हैं। उनके उद्यम में किस तरह की किताबें उनके लिए मुनाफे वाली साबित होती हैं जैसे सवाल के जवाब में बाजार में किताबों की बिक्री पर निगाह रखने वाले बताते हैं कि सेल्फ-हेल्प किताबों की बिक्री सबसे अधिक होती है। हमारे दैनिक जीवन के हर पहलु पर सलाह देने वाली किताबें बाजार में मिल जायेंगी। सबसे ज्यादा कमाई करने वाली किताबें सबसे बोलचाल वाले करती हैं। सेल्फ-हेल्प पुस्तकों की प्रभावशीलता को अक्सर बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए जाने की आलोचना की जाती है, मगर उनकी तासीर कुछ ऐसी होती है कि कोई यदि ऐसी किसी किताब को हाथ में उठा ले तो वह उसके पन्ने पलटते ही चला जाता है। पुस्तक प्रकाशन का उद्योग भी विपणन और प्रचार पर चलता है। ठीक से विपणन और प्रचार न हो तो पुस्तकों के रद्दी में परिवर्तित होने में देर नहीं लगती। तो क्या डिजिटल किताबें लक्षित लोगों तक पहुंचती हैं और हमें जंगलों और गम होती धरती को बचाने के लिए कागजी किताबों की बजाय ई-बुक्स पढ़ना शुरू कर देना चाहिए? जवाब आसान नहीं है क्योंकि डिजिटल किताबें जंगलों को तो बचाती हैं, लेकिन जहरीला इलेक्ट्रॉनिक कचरा भी पैदा करती हैं। कुछ भी हो हाथ में हो या डिवाइस पर, किताबें रहेंगी और उनके पाठक भी रहेंगे।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोडा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

राशिफल

बुधवार 17 अप्रैल, 2024



पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, आश्लेषा नक्षत्र गुरुवार प्रातः 7:57 तक, शूल योग रात्रि 11:50 तक, कौटिल्य करण दिन 3:15 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरु-मेघ, शुक-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज रविवार सम्पूर्ण दिन-रात है। ज्वालामुखी योग दिन 3:15 से आरम्भ होगा। आज श्री रामनवमी है, बसन्त नवरात्रा पूर्ण होंगे। आज स्वामी नारायण जयन्ती है। श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:16 तक, शुभ 10:51 से 12:26 तक, चर 3:37 से 5:13 तक, लाभ 5:13 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:05, सूर्यास्त 6:48

मेघ
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आमनन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। परिवारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मकर
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आज अंगणल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कुंभ
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक और धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज रचनात्मक कार्यों में समय व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

प्रधानमंत्रीजी के चुनावी भाषणों से राजस्थानी भाषा मान्यता की उम्मीद बनती है



राजेन्द्र जोशी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चुनावी भाषा पर भरोसा करें तो चुनावी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में

शामिल करने की उम्मीद दिखाई दे रही है। पहली बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राजस्थानी की चुनावी सभाओं में राजस्थानी कहावतें एवं भाषा का खूब प्रयोग कर रहे हैं। चुनावी सभाओं के दौरान जिस उत्साह से प्रधानमंत्री स्थानीय लोक देवताओं की जयजयकार के साथ राजस्थान के शूरवीरों की धरती को प्रणाम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी को स्थानीय नेताओं ने लोक भाषा एवं लोक रंग में रंगने का आग्रह किया होगा, जिसको उन्होंने स्वीकार करते हुए चुनावी भाषा के साथ-साथ राजस्थानी भाषा से अपनापन दिखाने का प्रयास भी किया है। बाड़मेर की चुनावी सभा में उन्होंने यह कहा था की भाषा एवं धर्म के नाम पर पिछली कांग्रेस की सरकारें

लोगों को बांटती रही। इससे यह उम्मीद बन सकती है कि जिस भाषा के नाम पर छलावा होता रहा शायद नरेन्द्र मोदी अब उस राजस्थानी भाषा के नाम पर छलावा नहीं होने देंगे। लम्बे समय से राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए आंदोलन होता रहा है। प्रधानमंत्री जी के प्रत्येक वाक्य का अर्थ होता है वह बार-बार कहते रहे हैं कि समस्याओं को लम्बित रखकर कांग्रेस सरकार ने उलझा कर रखा। हम भी पिछली सभी सरकारों से राजस्थानी भाषा की मान्यता की मांग करते रहे जिसका समाधान किसी भी सरकार ने नहीं किया। उन्होंने जब भाषा की बात की तो हमको थोड़ी उम्मीद बनती है कि प्रधानमंत्री कहते हैं कि भाषा और धर्म के नाम पर छलावा हुआ। राजस्थानी

भाषा की मान्यता का समाधान भी नहीं हुआ यह बात हमारे स्थानीय सांसदों को प्रधानमंत्री जी को स्पष्ट करनी चाहिए। राजस्थानी भाषा को किसी भी सरकार ने संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया। राजस्थान से नरेन्द्र मोदी को प्यार है और वह राजस्थान के नेताओं पर भरोसा भी खूब करते हैं इसका उदाहरण हमारे सामने है कि पिछले लोकसभा में लोकसभा अध्यक्ष राजस्थान के कोटा से आते हैं और राज्यसभा सभापति के रूप में भी राजस्थान के नेता को उन्होंने यह अवसर दिया। फिर वह जब यह कहते हैं कि हम भाषा और धर्म के नाम पर छलावा नहीं होने देंगे। ऐसे में राजस्थानी के नवनिर्वाचित होने वाले उन पच्चीस लोकसभा सदस्यों की

जिम्मेदारी बनती है कि वे आने वाली संसद में राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने हेतु हमारी मांग प्रधानमंत्री जी को करेंगे। राजस्थान के नवनिर्वाचित सांसदों से उम्मीद की जाती है कि नरेन्द्र मोदी जी को यह जरूर आग्रह करेंगे की राजस्थानी की मीठी और अपनापन लिए हुए राजस्थानी भाषा है। खुद प्रधानमंत्री जी भी चुनावी सभा में राजस्थानी लोकोक्तियां, राजस्थानी शब्दों, राजस्थानी कहावतें एवं राजस्थानी भाषा में संवाद कर रहे हैं। -राजेन्द्र जोशी, शिक्षाविद-साहित्यकार लेखक हिन्दी-राजस्थानी भाषा के लेखक है।

निवाड़ कृषि मण्डी में सौंफ की आठ हजार बोरी बिकने आई

व्यापारियों ने बताया कि मंडी में सौंफ के भाव 8 हजार से 11 हजार 500 रुपए रहे हैं

निवाड़, (निसं)। कृषि मण्डी में इन दिनों नई सौंफ की आवक बढ़ गई है। जिससे मंडी परिसर सौंफ के ढेरों की सुगन्ध से महकने लगा है। मण्डी में जगह-जगह सौंफ के ढेर लगे हुए हैं। व्यापारियों ने सौंफ की बोली लगाकर खरीद की।

मण्डी व्यापारी शिवप्रकाश पारीक ने बताया कि मण्डी में सौंफ गंगापुर, बौली, लालसोट, सपोटरा, गंगावाडा, उमर गांव, भरचून सहित कई क्षेत्र से सौंफ आ रही है। मण्डी में करीब आठ हजार से अधिक सौंफ की बोरीयां बिकने के लिए आई हैं। व्यापारियों ने बताया कि मंडी में सौंफ के भाव 8 हजार से 11 हजार 500 रुपए रहे हैं। सरसों की बम्पर आवक के बाद अब मंडी में सौंफ की आवक बढ़ने से एक और मंडी की आय में बढ़ोतरी हो रही

■ मण्डी में सरसों, चना, गेहू व जौ सहित कई जिंसे भी बिकने के लिए आ रही है



निवाड़ कृषि उपज मण्डी में नई सौंफ की व्यापारियों ने बोली लगाई।

ग्रामीणों ने पत्थरों से पीट-पीटकर लेपर्ड को मारा

वन विभाग की टीम लेपर्ड का शव सागवाड़ा वन विभाग के ऑफिस ले आई

डूंगरपुर, (निसं)। तालाब से नहाकर लौट रहे युवक को लेपर्ड ने हमला कर घायल कर दिया। बदले में गुस्साएँ ग्रामीणों ने पत्थरों से पीट-पीटकर खाई में गिरे लेपर्ड की हत्या कर दी। वन विभाग की टीम अंतिम संस्कार के लिए लेपर्ड का शव सागवाड़ा वन विभाग के ऑफिस ले आई। घटना सागवाड़ा और धंभोला वन क्षेत्र के बॉर्डर पर मेवडा गांव का है।

मेवड़ा दरबार घाटी निवासी जयंतिलाल पुत्र कमलशंकर मंगलवार सुबह करीब साढ़े आठ बजे तालाब पर नहाने गया था। नहाने के बाद जब वह वापस घर लौट रहा था। उसी समय पास की एक खाई में छिपे लेपर्ड ने उस पर हमला कर दिया। जिससे युवक घायल हो गया। हमले के बाद लेपर्ड फिर से खाई की ओर

■ तालाब से नहाकर लौट रहे युवक पर लेपर्ड ने हमला कर घायल कर दिया था



वन विभाग की टीम अंतिम संस्कार के लिए लेपर्ड के शव को सागवाड़ा वन विभाग के ऑफिस ले गई।

अंतिम संस्कार किया जायेगा। मृत लेपर्ड मादा थी और दो माह की थी।

वन विभाग मामले की जांच में जुटा है। इससे पहले फरवरी माह में वरदा

वन क्षेत्र में भी ग्रामीणों ने एक लेपर्ड को घेरकर मार दिया था।

भारत से इटली तक साइकिल यात्रा पर निकले लिली व एरे

उदयपुर, (कासं)। भारत एक वृहद जैव विविधता वाला देश है। पर्यावरण की रक्षा तथा वनस्पतियों व जीवों के प्रति प्रेम यहां की संस्कृति रही है। लेकिन विकास के नाम पर प्रकृति पर हो रहा आघात पीड़ादायी है। युवा वर्ग को प्रकृति अनुकूल जीवनशैली अपनाकर अपने कार्बन फुटप्रिंट को न्यूनतम करना चाहिए तथा पर्यावरण को समृद्ध बनाना चाहिए। यह विचार तमिलनाडु से इटली तक साइकिल यात्रा पर निकले लिली व एरे ने विद्या भवन पॉलिटेक्निक में आयोजित युवा पर्यावरण संवाद में व्यक्त किए। संवाद पॉलिटेक्निक की



लिली व एरे।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई, ग्रीन पीपल सोसायटी तथा सक्षम संस्थान के साथे

में आयोजित हुआ। उल्लेखनीय है कि जर्मन मूल की तथा अपनी तीन वर्ष की

■ लोगों को प्रकृति अनुकूल भवन निर्माण, देशी प्रजातियों को बचाने, प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने का संदेश देंगे

■ जर्मन मूल की तथा तमिलनाडु में रह रही लिली तथा इटली मूल के हैं एरे

उम्र से तमिलनाडु में रह रही लिली तथा इटली मूल के एरे अपने देशी प्रजाति के श्वान स्कु के साथ तेरह हजार किलोमीटर की साइकिल यात्रा पर निकले हैं। वे लोगों को प्रकृति अनुकूल भवन निर्माण, देशी प्रजातियों को बचाने, प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करने का संदेश देते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान जा रहे हैं। संवाद में ग्रीन पीपल सोसायटी के सुहेल मजबूर तथा डॉ. ललित जोशी ने कहा कि युवा वर्ग स्वयं में प्रकृति सेवा का भाव विकसित करें। प्रारंभ में प्राचार्य डॉ. अनिल मेहता ने उदयपुर की प्रकृति संरक्षण संस्कृति पर प्रकाश डाला।